

रविवार 19 सितंबर, 2021

विषय — सामग्री

स्वर्ण पाठ: नीतिवचन 4 : 20, 22

"हे मेरे पुत्र मेरे वचन ध्यान धरके सुन, क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।"

उत्तरदायी अध्ययन: इब्रानियों 11: 1-3, 32-35
भजन संहिता 119: 44, 46

- ¹ अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।
- ² क्योंकि इसी के विषय में प्राचीनों की अच्छी गवाही दी गई।
- ³ विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।
- ³² अब और क्या कहूँ क्योंकि समय नहीं रहा, कि गिदोन का, और बाराक और समसून का, और यिफतह का, और दाऊद का और शामुएल का, और भविष्यद्वक्ताओं का वर्णन करूँ।
- ³³ इन्होंने विश्वास ही के द्वारा राज्य जीते; धर्म के काम किए; प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं प्राप्त की, सिंहों के मुंह बन्द किए।
- ³⁴ आग की ज्वाला को ठंडा किया; तलवार की धार से बच निकले, निर्बलता में बलवन्त हुए; लड़ाई में वीर निकले; विदेशियों की फौजों को मार भगाया।
- ³⁵ स्त्रियों ने अपने मरे हुएों को फिर जीवते पाया; कितने तो मार खाते खाते मर गए; और छुटकारा न चाहा; इसलिये कि उत्तम पुनरुत्थान के भागी हों।
- ⁴⁴ तब मैं तेरी व्यवस्था पर लगातार, सदा सर्वदा चलता रहूँगा;
- ⁴⁶ और मैं तेरी चितौनियों की चर्चा राजाओं के साम्हने भी करूँगा, और संकोच न करूँगा;

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 46 : 1-3 (से 1st.), 4-6, 10, 11 (से 1st.)

- ¹ परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक।
- ² इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं;

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 3 चाहे समुद्र गरजे और फेन उठाए, और पहाड़ उसकी बाढ़ से कांप उठें॥
- 4 एक नदी है जिसकी नहरों से परमेश्वर के नगर में अर्थात् परमप्रधान के पवित्र निवास भवन में आनन्द होता है।
- 5 परमेश्वर उस नगर के बीच में है, वह कभी टलने का नहीं; पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता करता है।
- 6 जाति जाति के लोग झल्ला उठे, राज्य राज्य के लोग डगमगाने लगे; वह बोल उठा, और पृथ्वी पिघल गई।
- 10 चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर हूँ। मैं जातियों में महान हूँ, मैं पृथ्वी भर में महान हूँ!
- 11 सेनाओं का यहोवा हमारे संग है; याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है॥

2. दानियेल 3 : 1 (से :), 4-6, 8, 9 (से 1st.), 12-14, 16-21, 24-27

- 1 नबूकदनेस्सर राजा ने सोने की एक मूरत बनवाई, जिनकी ऊंचाई साठ हाथ, और चौड़ाई छः हाथ की थी। और उसने उसको बाबुल के प्रान्त के दूरा नाम मैदान में खड़ा कराया।
- 4 तब ढिंढोरिये ने ऊंचे शब्द से पुकार कर कहा, हे देश-देश और जाति-जाति के लोगों, और भिन्न भिन्न भाषा बोलने वालो, तुम को यह आज्ञा सुनाई जाती है कि,
- 5 जिस समय तुम नरसिंगे, बांसुली, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो, तुम उसी समय गिर कर नबूकदनेस्सर राजा की खड़ी कराई हुए सोने की मूरत को दण्डवत करो।
- 6 और जो कोई गिरकर दण्डवत न करेगा वह उसी घड़ी धधकते हुए भट्टे के बीच में डाल दिया जाएगा।
- 8 उसी समय कई एक कसदी पुरुष राजा के पास गए, और कपट से यहूदियों की चुगली खाई।
- 9 वे नबूकदनेस्सर राजा से कहने लगे, हे राजा, तू चिरंजीव रहे।
- 12 देख, शद्रक, मेशक, और अबेदनगो नाम कुछ यहूदी पुरुष हैं, जिन्हें तू ने बाबुल के प्रान्त के कार्य के ऊपर नियुक्त किया है। उन पुरुषों ने, हे राजा, तेरी आज्ञा की कुछ चिन्ता नहीं की; वे तेरे देवता की उपासना नहीं करते, और जो सोने की मूरत तू ने खड़ी कराई है, उसको दण्डवत नहीं करते॥
- 13 तब नबूकदनेस्सर ने रोष और जलजलाहट में आकर आज्ञा दी कि शद्रक मेशक और अबेदनगो को लाओ। तब वे पुरुष राजा के साम्हने हाजिर किए गए।
- 14 नबूकदनेस्सर ने उन से पूछा, हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, तुम लोग जो मेरे देवता की उपासना नहीं करते, और मेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत नहीं करते, सो क्या तुम जान बूझकर ऐसा करते हो?
- 16 शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने राजा से कहा, हे नबूकदनेस्सर, इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता।
- 17 हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते हुए भट्टे की आग से बचाने की शक्ति रखता है; वरन हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है।
- 18 परन्तु, यदि नहीं, तो हे राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत करेंगे॥
- 19 तब नबूकदनेस्सर झुंझला उठा, और उसके चेहरे का रंग शद्रक, मेशक और अबेदनगो की ओर बदल गया। और उसने आज्ञा दी कि भट्टे को सातगुणा अधिक धधका दो।

- 20 फिर अपनी सेना में के कई एक बलवान् पुरुषों को उसने आज्ञा दी, कि शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बान्धकर उन्हें धधकते हुए भट्टे में डाल दो।
- 21 तब वे पुरुष अपने मोजों, अंगरखों, बागों और और वस्त्रों सहित बान्धकर, उस धधकते हुए भट्टे में डाल दिए गए।
- 24 तब नबूकदनेस्सरे राजा अचम्भित हुआ और घबरा कर उठ खड़ा हुआ। और अपने मन्त्रियों से पूछने लगा, क्या हम ने उस आग के बीच तीन ही पुरुष बन्धे हुए नहीं डलवाए? उन्होंने राजा को उत्तर दिया, हां राजा, सच बात तो है।
- 25 फिर उसने कहा, अब मैं देखता हूं कि चार पुरुष आग के बीच खुले हुए टहल रहे हैं, और उन को कुछ भी हानि नहीं पहुंची; और चौथे पुरुष का स्वरूप ईश्वर के पुत्र के सदृश्य है॥
- 26 फिर नबूकदनेस्सर उस धधकते हुए भट्टे के द्वार के पास जा कर कहने लगा, हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, हे परमप्रधान परमेश्वर के दासो, निकल कर यहां आओ! यह सुन कर शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग के बीच से निकल आए।
- 27 जब अधिपति, हाकिम, गर्वनर और राजा के मन्त्रियों ने, जो इकट्ठे हुए थे, उन पुरुषों की ओर देखा, तब उनकी देह में आग का कुछ भी प्रभाव नहीं पाया; और उनके सिर का एक बाल भी न झुलसा, न उनके मोजे कुछ बिगड़े, न उन में जलने की कुछ गन्ध पाई गई।

3. भजन संहिता 56 : 3, 4

- 3 जिस समय मुझे डर लगेगा, मैं तुझ पर भरोसा रखूंगा।
- 4 परमेश्वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूंगा, परमेश्वर पर मैं ने भरोसा रखा है, मैं नहीं डरूंगा। कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है?

4. मत्ती 4 : 23, 24

- 23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।
- 24 और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं और मिर्गी वालों और झोले के मारे हुआओं को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया।

5. मत्ती 5 : 2

- 2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,

6. यूहन्ना 6 : 63

⁶³ आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आत्मा है, और जीवन भी हैं।

7. रोमियो 8: 1, 2

¹ सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।

² क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 468 : 9 (वहां)-11

पदार्थ में कोई जीवन, सत्य, बुद्धिमत्ता नहीं है, न ही पदार्थ। सब अनंत मन और उसकी अनंत अभिव्यक्ति है, भगवान के लिए सभी में है।

2. 139 : 4-9

शुरुआत से लेकर अंत तक, पवित्रशास्त्र आत्मा, मन की बात की विजय से भरपूर है। मूसा ने मन की शक्ति को उसके द्वारा सिद्ध किया, जिसे पुरुषों ने चमत्कार कहा; तब यहोशू, एलिय्याह और एलीशा ने किया। संकेत और चमत्कार के साथ ईसाई युग की शुरुआत हुई।

3. 335 : 7 (आत्मा)-15

आत्मा, ईश्वर, ने सभी को स्वयं में बनाया है। आत्मा ने कभी सामग्री नहीं बनाई। आत्मा में ऐसा कुछ नहीं है जिससे सामग्री बनाई जा सके, क्योंकि बाइबल घोषित करती है, बिना लोगो के, परमेश्वर का वचन या वचन, “जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई” आत्मा एकमात्र पदार्थ है, अदृश्य और अविभाज्य अनंत भगवान। आध्यात्मिक और शाश्वत चीजें पर्याप्त हैं। चीजें सामग्री और अस्थायी असाध्य हैं।

4. 159 : 23-29

मेडिकल स्कूल मनुष्य की स्थिति को मन के बजाय सामग्री से सीखेंगे। वे यह पता लगाने के लिए फेफड़े, जीभ और नाड़ी की जांच करते हैं कि सामग्री को कितना सामंजस्य, या स्वास्थ्य, सामग्री की अनुमति है, - कितना दर्द या आनंद, क्रिया या ठहराव, सामग्री का एक रूप दूसरे रूप की सामग्री की अनुमति दे रहा है।

5. 160 : 14-29

शरीर रचना विज्ञान को तंत्रिकाओं के लिए मस्तिष्क के जनादेश को पेशी तक पहुंचाने की आवश्यकता होती है और इसलिए कार्रवाई का कारण बनता है; लेकिन जब डोरियां सिकुड़ती हैं और अचल हो जाती हैं तो शरीर रचना

विज्ञान क्या कहता है? क्या नश्वर मन ने उनसे बात करना बंद कर दिया है, या उन्हें नपुंसक होने के लिए कहा है? क्या मांसपेशियाँ, हड्डियाँ, रक्त और नसें एक बार में मन के विरुद्ध विद्रोह कर सकती हैं और दूसरे में नहीं, और मानसिक विरोध के बावजूद तंग हो सकती हैं?

जब तक मांसपेशियाँ हर समय स्व-अभिनय नहीं करतीं, वे कभी भी ऐसी नहीं होतीं, - मानसिक दिशा के विपरीत कार्य करने में कभी भी सक्षम नहीं होती हैं। यदि मांसपेशियाँ कार्य करना बंद कर सकती हैं और अपनी पसंद से कठोर हो सकती हैं, - विकृत या सममित हो, जैसा कि वे चाहते हैं या रोग के निर्देश के रूप में, - उन्हें आत्म-निर्देशन होना चाहिए। फिर यह जानने के लिए शरीर रचना विज्ञान से परामर्श क्यों लें कि नश्वर मन मांसपेशियों को कैसे नियंत्रित करता है, अगर हमें केवल शरीर रचना से सीखना है कि मांसपेशी इतनी नियंत्रित नहीं है?

6. 161 : 3-10

आप कहते हैं, "मैंने अपनी उंगली जला दी है।" यह एक सटीक कथन है, जो आपके अनुमान से अधिक सटीक है; क्योंकि नश्वर मन इसे जलाता है, न कि कोई पदार्थ। पवित्र प्रेरणा ने मन की अवस्थाएँ पैदा की हैं जो आग की लपटों को कम करने में सक्षम हैं, जैसे बाइबिल में तीन युवा हिब्रू बंदियों को बेबीलोनियन भट्टी में डाला गया था; जबकि एक विपरीत मानसिक स्थिति सहज दहन उत्पन्न कर सकती है।

7. 113 : 26-32

ईसाई विज्ञान के दैवीय तत्वमीमांसा, गणित में विधि की तरह, नियम को उलटा करके साबित करते हैं। उदाहरण के लिए: सत्य में कोई दर्द नहीं है, और दर्द में कोई सच्चाई नहीं है; मन में कोई तंत्रिका नहीं, और कोई मन तंत्रिका में नहीं; मन में कोई सामग्री नहीं, और भौतिक में कोई मन नहीं; जीवन में कोई सामग्री नहीं, और भौतिक में कोई जीवन नहीं; सामग्री में कोई अच्छा नहीं है, और सामग्री में कोई अच्छा नहीं है।

8. 288 : 3-8

सत्य और त्रुटि के बीच काल्पनिक युद्ध केवल आध्यात्मिक इंद्रियों के साक्ष्य और भौतिक इंद्रियों की गवाही के बीच मानसिक संघर्ष है, और आत्मा और मांस के बीच यह युद्ध सभी प्रश्नों को ईश्वरीय प्रेम में विश्वास और समझ के माध्यम से सुलझाएगा।

9. 243 : 4-9

दैवीय प्रेम, जिसने जहरीली सांप को हानिरहित बना दिया, जिसने उबलते हुए तेल से पुरुषों को ज्वलंत भट्टी से, शेर के जबड़े से, हर उम्र में बीमार और पाप और विजय से मृत्यु तक पहुंचाया। इसने नायाब शक्ति और प्रेम के साथ यीशु के प्रदर्शनों को ताज पहनाया।

10. 162 : 16-28

व्यवहार में विज्ञान के नियमों को पूरा करके, लेखक ने अपने गंभीर रूपों में तीव्र और पुरानी बीमारी दोनों के मामलों में स्वास्थ्य को बहाल किया है। साव बदल दिया गया है, छोटे अंगों को लम्बा कर दिया गया है, कठोर जोड़ों को कोमल बनाया गया है, और स्वस्थ परिस्थितियों के लिए हिंसक हड्डियों को बहाल किया गया है। मैंने फेफड़ों के खोए हुए पदार्थ को बहाल कर दिया है, और स्वस्थ संगठन स्थापित किए गए हैं जहां रोग जैविक था। ईसाई विज्ञान जैविक रोग को ठीक उसी तरह ठीक करता है जैसे कि यह क्रियात्मक कहलाता है, क्योंकि इसे उच्च नियम को प्रदर्शित करने के लिए केवल ईसाई विज्ञान के दैवीय सिद्धांत की पूरी समझ की आवश्यकता होती है।

11. 391 : 7-13, 18-28

रोग के उद्दीप्त या उन्नत चरणों में अंधे और शांत प्रस्तुत करने के बजाय, उनके खिलाफ विद्रोह में वृद्धि। इस विश्वास को समाप्त करें कि आप संभवतः एक ही असहनीय दर्द का सामना कर सकते हैं, जिसे मन की शक्तियों द्वारा खारिज नहीं किया जा सकता है, और इस तरह आप शरीर में दर्द के विकास को रोक सकते हैं। भगवान का कोई भी कानून इस परिणाम में बाधा नहीं डालता है।

जब शरीर को यह कहना चाहिए, "मैं बीमार हूँ," कभी भी दोषी नहीं होना चाहिए। चूंकि सामग्री बात नहीं कर सकती, इसलिए इसे नश्वर मन होना चाहिए जो बोलता है; इसलिए एक विरोध के साथ अंतरंगता को पूरा करें। यदि आप कहते हैं, "मैं बीमार हूँ," आप दोषी मानते हैं। तब आपका विरोधी आपको न्यायाधीश (नश्वर मन) के पास पहुंचा देगा, और न्यायाधीश आपको सजा देगा। बीमारी के पास खुद को कुछ घोषित करने और उसके नाम की घोषणा करने की कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। नश्वर मन ही अकेला वाक्य करता है। इसलिए बीमारी के साथ अपनी शर्तें बनाएं, और सिर्फ अपने लिए और दूसरों के लिए बनें।

12. 393 : 16-24, 29-4

अपनी समझ में दृढ़ रहें कि दिव्य मन शासन करता है, और यह कि विज्ञान में मनुष्य ईश्वर की सरकार को दर्शाता है। इस बात का कोई डर न रखें कि सामग्री दर्द कर सकती है, सूजन हो सकती है, और किसी भी प्रकार के नियम के परिणामस्वरूप सूजन हो सकती है, जब यह स्व-स्पष्ट है कि सामग्री में कोई दर्द नहीं हो सकता है और न ही सूजन हो सकती है। आपका शरीर किसी पेड़ के तने की तुलना में तनाव या घावों से अधिक पीड़ित नहीं होगा, जिसे आप तोड़ते हैं या बिजली के तार जो आप खींचते हैं, क्या यह नश्वर मन के लिए नहीं थे।

मनुष्य कभी बीमार नहीं होता, क्योंकि मन बीमार नहीं होता और न ही पदार्थ हो सकता है। एक गलत धारणा दोनों बहकानेवाला और प्रलोभन, पाप और पापी, बीमारी और उसके कारण है। बीमारी में शांत होना अच्छा है; आशावादी होना भी बेहतर है; लेकिन यह समझना कि बीमारी वास्तविक नहीं है और यह सत्य इसकी वास्तविक वास्तविकता को नष्ट कर सकता है, सबसे अच्छा है, इस समझ के लिए सार्वभौमिक और सही उपाय है।

13. 120 : 11 (सामग्री)-12

... सामग्री मनुष्य के लिए कोई शर्त नहीं बना सकती।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6